RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

कोटा नगर के कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन

डॉ. राजबाला वशिष्ठ

सह- आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, राज. कला कन्या महाविद्यालय, कोटा (राज.)

Abstract:
कोचिंग संस्थान किसी भी प्रतियोगी परीक्षा के लिये छात्रों को तैयार करने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। समय के साथ आज कोचिंग संस्थानों की महत्ता और उनकी भूमिका में भी बहुत परिवर्तन आया है। जैसे-जैसे प्रतियोगिता कठिन से कठिन होती गई, लोगों को यह लगने लगा कि स्वाध्याय के साथ-साथ कोचिंग भी जरुरी है। राजस्थान का कोटा नगर भी 'कोचिंग हब' के नाम से जाना जाता है। यहाँ प्रतिवर्ष हजारों-लाखों की संख्या में देश के सभी राज्यों से छात्र कोचिंग करने आते हैं। विद्यार्थियों को कोचिंग अवधि के दौरान विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस आलेख में कोचिंग के विद्यार्थियों से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। इस शोध पत्र में विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं एवं प्रकाशित व अप्रकाशित लेखों के माध्यम से सूचनायें प्राप्त की गई हैं। इस अध्ययन में कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से संबंधित विभिन्न समस्याओं मुख्यतः अच्छे बुनियादी ढाँचों एवं सुविधाओं की समस्या, छात्रावास, आवास व मेस की समस्या, पारिवारिक आकांक्षाएँ एवं शैक्षणिक प्रदर्शन में असन्तुलन, विभिन्न आर्थिक समस्यायें, पारिवारिक व सामाजिक सम्पर्क की कमी, प्रतियोगी परीक्षा में असफल होने का भय एवं तनाव, सोशल मीडिया का मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव, आर्थिक समस्यायें आदि को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है।
निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कोटा नगर 'कोचिंग हब' के रूप में सम्पूर्ण देश में विकसित होता जा रहा है। यहाँ दिन-प्रतिदिन कोचिंग करने वाले विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। इसलिये कोचिंग विद्यार्थियों को नवीन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अतः इस शोध पत्र के माध्यम से कोचिंग के विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

Keywords: *कोचिंग संस्थान, विद्यार्थी, प्रतियोगी परीक्षा, तनाव, समस्यायें, आईआईटी।*

प्रस्तावना –

राजस्थान का कोटा शहर राज्य का 'शिक्षा नगरी' कहलाता है। राजस्थान का यह शहर इंजीनियरिंग व मेडिकल शिक्षण शाखाओं के लिये तैयारी करने हेतु कोचिंग करवाने में अव्वल हैं। इस शहर के प्रमुख कोचिंग संस्थान एलेन क्लासेज, बंसल क्लासेज, सर्वोत्तम क्लासेज, कैरियर पॉइंट, रेजोनेंस क्लासेज, बाइब्रेट अकेडमी आदि हैं। इन विभिन्न कोचिंग संस्थानों में प्रतिवर्ष हजारों व लाखों की संख्या में देश के सभी राज्यों से छात्र कोचिंग करने आते हैं और इन छात्रों ने विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होकर कोटा शहर का देश में नाम भी रोशन किया है। किन्तु पिछले कुछ वर्षों से एक समस्या हमारे समक्ष विकराल रूप धारण करती जा रही है, वह यह कि यहाँ आने वाले छात्र किन्हीं कारणों से तनाव व अवसाद से ग्रसित होकर आत्महत्या कर लेते हैं। आत्महत्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है, इन घटनाओं से यह प्रतीत होता है कि विद्यार्थियों को यहाँ विभिन्न समस्याओं से गुजरना पड़ता हैं। इस शोध पत्र में विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। कोचिंग विद्यार्थियों की समस्याओं को उजागर करके उनके समाधान निकालने की युक्तियाँ भी इस शोध पत्र के माध्यम से खोजी गई हैं। ये समस्याएँ मुख्यतः अच्छे बुनियादी ढाँचों एवं सुविधाओं की समस्या, छात्रावास, आवास व मेस की समस्या, पारिवारिक आकांक्षाएँ व शैक्षणिक प्रदर्शन में असन्तुलन, विभिन्न आर्थिक समस्यायें, प्रतियोगी परीक्षा में असफल होने का भय, शैक्षणिक समस्या आदि हैं। अतः इन समस्याओं का समाधान करने के लिये इस शोध-पत्र की उपादेयता है।

सारणी संख्या-1 कोटा नगर के कोचिंग संस्थान

क्र.सं.	कोचिंग संस्थान का नाम	निदेशक	स्थापना वर्ष
1	बंसल क्लासेज	वी.के. बंसल	**1985**
2	एलन क्लासेज	माहेश्वरी ब्रदर्स	**1988**
3	करियर प्वाइंट	प्रमोद माहेश्वरी	**1993**
4	गूंज	आर. के. वर्मा	**2001**
5	मोशन आईआईटी	नितिन विजय	**2007**

प्रस्तुत शोध-पत्र में विभिन्न सूचनाओं एवं सामग्री का संकलन विभिन्न समाचार-पत्र पत्रिकाओं, पुस्तकों, प्रकाशित एवं अप्रकाशित प्रलेखों, विभिन्न संस्थाओं द्वारा जारी किये गये आँकड़े एवं सरकारी आँकड़ों के अन्तर्वस्तु विश्लेषण प्रविधि के माध्यम से किया जाएगा।

डॉ. जमनालाल बायती ने अपनी पुस्तक 'बाल विकास समस्या और समाधान' **(2006)**, में विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डालते हुये 'कोचिंग' को एक आवश्यक बुराई माना है। लेखक द्वारा प्रस्तुत पुस्तक में बालकों की मनोवैज्ञानिक व सामाजिक समस्याएँ, कमजोर बालक व आशावादी अभिभावक, किशोरावस्था में अभिभावकों का मार्गदर्शन आदि सम्प्रत्ययों को स्पष्ट किया है। डॉ. चंचल वर्मा सिंह ने अपनी पुस्तक 'बालकों की भावनाओं व व्यक्तित्व का अध्ययन सामान्य एवं अपराधी बालक' **(2011)** में बालकों की विभिन्न मनोवैज्ञानिक समस्याओं को स्पष्ट किया। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के द्वारा बालकों के व्यक्तित्व विकास, व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले तत्व, संवेग के कुछ प्रतिरूप, बालकों के सामाजिक-आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक आदि का विवेचन किया है। डॉ. ओ.पी. शर्मा ने अपनी पुस्तक 'समाज मनोविज्ञान' **(2005)** में यह स्पष्ट किया है कि परिवार में प्रत्येक बालक की जीवन शैली अपने जन्म-क्रम के अनुसार विकसित होती है। उसका समाजीकरण भी भिन्न प्रकार से होता है, जन्मक्रम का उसके समाजीकरण पर प्रभाव पड़ता है। लेखक द्वारा निष्कर्षत यह कहा गया कि मध्यक्रम का बालक सामाजिक मूल्यों को अस्वीकार करता है व समस्याओं का शीघ्र समाधान नहीं कर पाता है। विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं एवं संस्थानों के शोध आँकड़ों के विश्लेषण के माध्यम से कोटा के कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की विभिन्न समस्याओं विशेषकर डमी विद्यालयों की नकारात्मक सामाजिक-शैक्षिक प्रवृति, खेल गतिविधियों की कमी, उचित मार्गदर्शन एवं मनोवैज्ञानिकों की परामर्श सेवा में कमी, विद्यार्थियों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृति, विभिन्न सामाजिक व आर्थिक समस्याओं को शोध-पत्र में व्यक्त किया गया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में कोटा नगर के कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की निम्नलिखित समस्याओं को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है

1. **आर्थिक समस्याएँ** – कोटा नगर के कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत् अधिकांश विद्यार्थी स्थानीय नहीं है बल्कि वे देश के अलग-अलग शहरों से यहाँ कोचिंग करने आते हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें हॉस्टल, मेस, वाहन आदि का अतिरिक्त खर्च वहन करना होता है। साथ ही कोचिंग संस्थानों की भारी फीस भी उनके अभिभावकों को कोचिंग संचालकों को देनी पड़ती हैं। अभिभावकों द्वारा अधिक धन खर्च करने के कारण विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षा के परिणामों को लेकर तनाव व अवसाद का अनुभव करने लगते हैं।
2. **पारिवारिक समस्याएँ** – कई बार अभिभावक बालकों को कोचिंग संस्थानों में भेजकर निश्चिन्त हो जाते हैं, ऐसी स्थिति में बालकों को अभिभावकों के साथ पर्याप्त सम्पर्क एवं उचित मार्गदर्शन प्राप्त नहीं हो पाता है। कुछ विद्यार्थियों के परिवार की आर्थिक स्थिति भी कमजोर होती है। अधिकांश विद्यार्थी ऐसे होते हैं जिनके अभिभावक कामकाजी होते हैं और वे अपने बालक का उचित मार्गदर्शन नहीं कर पाते हैं। माता-पिता द्वारा बालकों की अवहेलना करना भी एक चिन्ता का विषय है। विद्यार्थियों को पारिवारिक वातावरण एवं सहयोग भी प्राप्त नहीं हो पाता है, ऐसी स्थिति में वे अकेलेपन का अनुभव करते हैं।
3. **सामाजिक समस्याएँ -** कोचिंग में अध्ययनरत् विद्यार्थी विभिन्न शहरों से आकर कोटा में कोचिंग करते हैं। वे अपने परिवार, मित्रों एवं समाज के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित नहीं कर पाते हैं और अलगाव व अकेलेपन का अनुभव करते हैं। प्रतियोगी परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने एवं असफलता के कारण सामाजिक अवहेलना का भय भी विद्यार्थियों में बना रहता है।
4. **शैक्षणिक समस्याएँ -** कोचिंग में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शिक्षा एवं शिक्षण प्रक्रिया से संबंधित समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। विद्यार्थियों को पृथक कक्षाओं के आयोजन, नवीन एवं तकनीकी शिक्षण प्रक्रिया का अभाव कोचिंग फैकल्टी की अस्थायी प्रवृति आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
5. **मनोवैज्ञानिक समस्या** – कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत अधिकांश विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षा जैसे आईआईटी, जेईई-मैन्स, एआईईईई आदि में असफलता के भय के कारण तनाव व अवसाद से ग्रसित हो जाते है। कोचिंग संस्थानों में तनाव प्रबन्धन की उचित व्यवस्था न होने से भी उन्हें तनाव मुक्त वातावरण नहीं मिल पाता हैं। पढ़ाई में कमजोर छात्रों को भी अतिरिक्त कक्षाएँ एवं उचित संबल प्राप्त नहीं हो पाता है, अतः वे अनेक मानसिक विकारों से ग्रसित हो जाते हैं।

अतः निष्कर्षत यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य कोटा नगर के कोचिंग संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों समस्याएँ उजागर करने के साथ-साथ इन समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव खोजना रहा है। इनकी समस्याओं के समाधान हेतु कोचिंग संस्थानों के संचालकों एवं प्रशासन अधिकारियों को भरसक प्रयास किये जाने चाहिये अन्यथा विद्यार्थियों का

उज्ज्वल भविष्य अंधकारमय हो जायेगा। विद्यार्थियों हेतु उचित दिशा-निर्देशों का निर्माण कर सख्ती से पालन करवाया जाना चाहिये एवं तनाव प्रबन्धन की उचित व्यवस्था की जानी चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

1. **बायती, जे.एल. (**2006), **बाल विकास समस्या और समाधानः अग्रवाल पब्लिशिंग हाउस**, **जयपुर।**
2. **सिंह, सी.वी. (**2011), **बालकों की भावनाओं व व्यक्तित्व का अध्ययन सामान्य एवं अपराधी बालक : कल्पज पब्लिकेशन**, **दिल्ली।**
3. **शर्मा, ओ.पी. (**2005), **समाज मनोविज्ञान : यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन**, **नई दिल्ली**
4. M. Patrica.com